वचन सर्वे गाइए प्रेमना, तेना अर्थ अंगमा समाय।
ते ता अर्थ प्रगट पाधरा, हस्तक वाला संग थाय।।५।।

सखियो! आप सब मिलकर प्रेम वचन ही गाएं। जिसका भाव हृदय में आ जाए और हाथ पकड़ कर प्रियतम के साथ खेलें।

अमृत पीजे ने चुमन दीजे, कंठडे वालाने वलाइए।
हमचडीमां त्रण रस लीजे, रेहेस रामतडी गाइए।।६।।

इस खेल में तीन प्रकार के आनन्द लें। अधरों से रस पिएं। चुम्बन दें। वालाजी के गले से लिपट कर आनन्द भरे गीत गाएं।

ए रामतमा विलास जे कीधा, ते केहेवाय नहीं मुख वाणी रे।
सर्वे सुखडा लई करीने, रह्या हृदयामां जाणी रे।।७।।

इस खेल में जो हमने विलास के सुख लिए, वह शब्दों द्वारा वर्णन नहीं हो सकते हैं। सब प्रकार के सुख लेकर हृदय में उनका अनुभव होता है।

जेटला वचन गाया अमे रमता, ते सर्वेना सुख लीधां।
कहे इंद्रावती केम कहूं वचने, अनेक सुख वाले दीधां।।८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि जिन वचनों को हमने गाया, उन सबका सुख रास में वालाजी ने हमको दिया, जो वर्णित नहीं हो सकता।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ४५४ ।।

राग मारू

वाला आपण रमिए आंख मिचामणी, ए सोभा जाय न कही रे।
निकुंजना मंदिर अति सुंदर, आपण छपिए ते जुजवा थई रे।।१।।

हे वालाजी! आओ हम आंख मिचौनी की रामत खेलें। जिसकी शोभा कहने में नहीं आती। फूलों के कमरे अति सुन्दर हैं। इनमें अलग-अलग छिप जाएं।

एवुं सुणीने साथ सहु हरख्यो, ए छे रामतडी सारी।
पेहेलो दाव आपणमा कोण देसे, ते तमे कहोने विचारी।।२।।

ऐसा सुनकर सभी सुन्दरसाथ खुश हो गए। यह खेल बहुत अच्छा है। विचार करके कहें कि पहले अपने में से दांव (बारी) कौन देगा?

सहु साथ कहे वालो दाव देसे, पेहेलो ते पिउजीनो वारो।
जो पेहेलो दाव आपण दऊं, तो ए झलाए नहीं धुतारो।।३।।

सब साथ ने उत्तर दिया कि पहले वालाजी ही दाव देंगे। पहले उनकी ही बारी है। यदि हम पहले दांव (बारी) देंगे तो यह छलिया पकड़ा नहीं जाएगा।

आवो रे वाला हूं आंखडी मीचूं, आंखडी ते मीचजो गाढो।
अमे जईने वनमां छपिए, पछे तमे खोलीनें काढो।।४।।

आओ वालाजी! पहले मैं आपकी आंखें मीचूं। आप खुद अपनी आंख बन्द करते हो तो जोर से बन्द करना। हम सब वन में जाकर छिप जाते हैं। फिर आप हमको ढूंढ लेना।

Nijanand App

सखियो तमे छाना थई छपजो, भूखण ऊंचा चढाओ।
रखे सखियो कोई आप झलाओ, मारा वालाजीने खीदडी खुदावो।। ५ ।।

हे सखियो! तुम चुपचाप छिपना और अपने आभूषणों को भी ऊपर चढ़ा लेना, ताकि उनकी भी आवाज न आए, कोई पकड़ में भी नहीं आना, जिससे हम वालाजी की हंसी उड़ाएं।

छेलाइए छाना थई छपजो, रखे कोई बोलतूं कांई।
ए काने सरूओ छे सबलो, हमणा ते आवसे आंहीं।। ६ ।।

बड़ी चालाकी के साथ तुम छिपना, कोई बोले नहीं। यह धीमी आवाज भी सुन लेते हैं और वहीं आ जाएंगे।

लपतो छपतो आवे छे, सखियो सावचेत थाइए।
आणीगमां जो आवे वालो, तो इहां थकी उजाइए।। ७ ।।

वालाजी लुकते-छिपते आएंगे। तुम सब होशियार रहना। वालाजी इस तरफ से आएं तो यहां से भाग जाना।

जो कदाच वालो आवे ओलीगमां, तो आपण पैए जैए।
दाव रहे जो वालाजी ऊपर, तो फूली अंग न मैए।। ८ ।।

यदि वालाजी दूसरी तरफ से आएं तो हम थपकी (पाली) मारने की जगह पर दौड़कर आ जाएं। इस तरह से दांव (बारी) वालाजी पर ही रहेगी जिससे बड़ा आनन्द आयेगा।

ते माटे सहु आप संभारी, रखे कोई प्रगट थाय रे।
जो दाव आपण ऊपर आवसे, तो ए केमे नहीं झलाय रे।। ९ ।।

इसलिए सखियो, अपने आपको संभालो, जाहिर भी न होने दो। यदि बारी (दांव) अपने ऊपर आ जाए तो फिर यह हमारी पकड़ में नहीं आएंगे।

अमे निकुंज वनथी निसर्या, आवी थवकला खाधां।
वाले वनमां चीमी चीमी, श्री ठकुराणीजी ने लाधां।। १० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं निकुंज वन से निकली और पाली पर जाकर थपकी लगा दी। वालाजी ने धीरे-धीरे वन में जाकर श्री श्यामाजी को पकड़ लिया।

सखियो जाओ तमे छपवा, हूं दऊं दाव स्यामाजी ने साटे।
हूं रमी सूं नथी जाणती, तमे स्याने देओ मूं माटे।। ११ ।।

वालाजी कहते हैं, हे सखियो! तुम वन में छिपने जाओ। मैं श्री श्यामाजी के बदले में (दाव) बारी देता हूं। श्री श्यामाजी कहती हैं, क्या मैं खेलना नहीं जानती? तुम मेरे बदले में क्यों दाव (बारी) दोगे?

रामतमां मरजाद म करजो, रमजो मोकले मन।
नासी सको तेम नासजो, तमे सुणजो सर्वे जन।। १२ ।।

श्री श्यामाजी वालाजी से कहती हैं कि खेल में मर्यादा नहीं करना। आप खुले मन से खेलें। भाग सको तो भागना, ऐसा सबको सुनाकर श्री श्यामाजी ने कहा।

Nijanand App

स्यामाजी आंखडली मीचीने ऊभा, सखियो वनमां पसरी।
सहु कडछीने रमे जुजवा, भूखण लीधां ऊंचा धरी।। १३ ।।

श्री श्यामाजी अपनी आंख बन्द करके खड़ी हुई। सखियां वन में छिप गईं। सब सखियां अपने आभूषण ऊंचे करके तथा कपड़ों को कमर में समेट कर खेलती हैं।

आनंद मांहें सहुए सखियो, पैए जाय उजाणी।
भूखण न दिए बाजवा, एणी चंचलाई जाय न बखाणी।। १४ ।।

सब सखियां आनन्द में हैं और पाली (ठप्पा लगाने का निश्चित स्थान) की तरफ दौड़कर जा रही हैं। वह अपने आभूषणों की आवाज नहीं होने देतीं। उनकी ऐसी चतुराई की महिमा बखान से बाहिर है।

उलास दीसे अंगों अँगे, श्रीस्यामाजी ने आज।
ठेक दई ठकुराणीजीए, जईने झाल्या श्री राज।। १५ ।।

आज श्री श्यामाजी के अंग-अंग में उमंग दीख रही है। उन्होंने कूदकर झपट्टा मारा और वालाजी को पकड़ लिया।

ए रामत घणूं रूडी थई, मारा वालाजीने संग।
कहे इंद्रावती निकुंज वन, घणूं रमतां सोहे रंग।। १६ ।।

वालाजी के साथ निकुंज वन में हमने यह खेल बड़े आनन्द से खेला, ऐसा श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ४७० ।।

राग अडोल गोरी–चरचरी

सखी वृखभान नंदनी, कंठ कर कृष्ण नी।
जोड एक अंगनी, रमती रंगे रास री।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! वृखभाननन्दिनी (श्री राधाजी) श्री कृष्णजी के गले में हाथ डालकर रास खेलती हैं। यह युगल स्वरूप जैसे एक ही अंग हो, ऐसा लगता है।

स्याम स्यामाजी जोड सुचंगी, जुओ सकल सुंदरी।
सोभा मुखारविंदनी, करे मांहों मांहें हांस री।। २ ।।

हे सखियो! देखो श्री श्याम-श्यामाजी की जोड़ी बहुत अच्छी है। दोनों के मुखारबिन्द की शोभा मनमोहक है और वे आपस में हंसते हैं।

भूखण लटके भामनी, कांई तेज करण कामनी।
संग जोड स्यामनी, वनमां करे विलास री।। ३ ।।

श्री श्यामाजी के आभूषण लटक रहे हैं। जिनके तेज की किरणों से मन में कामनाएं उठती हैं। ऐसी श्री श्यामाजी की जोड़ी श्याम के साथ वन में आनन्द कर रही है।

पांउं भरे एक भांतसुं, रमती रंग खांतसुं।
जुओ सखी जोड कान्हसुं, कांई सुंदरी सकला परी।। ४ ।।

वह एक पांव भी जब आगे चलते हैं तो उमंग और चाहना से चलते हैं। हे सखियो! तुम सब कन्हैया की जोड़ी को देखो। कैसी है जो श्री श्यामाजी के साथ सर्वश्रेष्ठ है।

Nijanand App